❍ 01 / 01 / 22 की मुरली से चार्ट ❍

⇛ TOTAL MARKS:- 100 ⇚

∬ 1 ∬ होमवर्क (Marks: 5*4=20)

➢➢ *कभी भी अपना अहंकार तो नहीं दिखाया ?*

➢➢ *एक बाप में सारे संसार की अनुभूति की ?*

➢➢ *पवित्रता रुपी धर्म को जीवन में धारण किया ?*

➢➢ *लगन में मगन अवस्था का अनुभव किया ?*

———————————————

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

☆ *अव्यक्त पालना का रिटर्न* ☆

❂ *तपस्वी जीवन* ❂

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

〰✧ *जैसे कोई कमजोर होता है तो उनको शक्ति भरने के लिए ग्लूकोज चढ़ाते हैं, ऐसे जब अपने को शरीर से परे अशरीरी आत्मा समझते हो तो यह साक्षीपन की अवस्था शक्ति भरने का काम करती हैं* और जितना समय साक्षी अवस्था की स्थिति रहती है उतना ही बाप साथी भी याद रहता है अर्थात् साथ रहता है।

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

∬ 2 ∬ तपस्वी जीवन (Marks:- 10)

➢➢ *इन शिक्षाओं को अमल में लाकर बापदादा की अव्यक्त पालना का रिटर्न दिया ?*

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚
☆ *अव्यक्त बापदादा द्वारा दिए गए* ☆
❂ *श्रेष्ठ स्वमान* ❂
✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

✺ *"मैं रूहानी नशे में स्थित रहने वाली श्रेष्ठ आत्मा हूँ"*

〰✧ सदा रुहानी नशे में स्थित रहते हो? *रुहानी नशा अर्थात् आत्म अभिमानी बनना। सदा चलते-फिरते आत्मा को देखना यही है रुहानी नशा। रुहानी नशे में सदा सर्व प्राप्ति का अनुभव सहज ही होगा।* जैसे स्थूल नशे वाले भी अपने को प्राप्तिवान समझते हैं, वैसे यह रुहानी नशे में रहने वाले सर्व प्राप्ति स्वरुप बन जाते हैं। इस नशे में रहने से सर्व प्रकार के दुख दूर हो जाते हैं।

〰✧ दु:ख और अशान्ति को विदाई हो जाती है। जब सदाकाल के लिए सुखदाता के, शान्तिदाता के बच्चे बन गये तो दुख अशान्ति को विदाई हो गई ना। अशान्ति का नामनिशान भी नहीं। *शान्ति के सागर के बच्चे अशान्त कैसे हो सकते। रुहानी नशा अर्थात् दुख और अशान्ति की समाप्ति।* उसकी विदाई का समारोह मना दिया? क्योंकि दुख अशान्ति की उत्पत्ति होती है अपवित्रता से। जहाँ अपवित्रता नहीं वहाँ दुख अशान्ति कहाँ से आई।

〰✧ *पतित पावन बाप के बच्चे मास्टर पतित पावन हो गये। जो औरों को पतित से पावन बनाने वाले हैं वह स्वयं भी तो पावन होंगे ना। जो पावन पवित्र आत्मायें हैं उनके पास सुख और शान्ति स्वत: ही है। तो पावन आत्मायें, श्रेष्ठ आत्मायें विशेष आत्मायें हो। विश्व में महान् आत्मायें हों क्योंकि बाप के बन गये। सबसे बडे ते बडी महानता है पावन बनना।* डसलिए आज भी डसी

महानता के आगे सिर झुकाते हैं। वह जड़ चित्र किसके हैं? अभी मन्दिर में जायेंगे तो क्या समझेंगे? किसकी पूजा हो रही है? स्मृति में आता है-कि यह हमारे ही जड़ चित्र हैं। ऐसे अपने को महान् आत्मा समझकर चलो। ऐसे दिव्य दर्पण बनो जिसमें अनेक आत्माओंको अपनी असली सूरत दिखाई दे।

⋆｡˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

∬ 3 ∬ स्वमान का अभ्यास (Marks:- 10)

➢➢ *इस स्वमान का विशेष रूप से अभ्यास किया ?*

⋆｡˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

———————————————————

⋆｡˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

❂ *रूहानी ड्रिल प्रति* ❂

☆ *अव्यक्त बापदादा की प्रेरणाएं* ☆

⋆｡˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

〰✧ ऑर्डर करो, जैसे हाथ को ऊपर उठाना चाहो तो उठा लेते हो। क्रेक नहीं है तो उठा लेते हो ना! ऐसे मन, यह सूक्ष्म शक्ति कन्ट्रोल में आनी है। लाना ही है। *ऑर्डर करो - स्टॉप तो स्टॉप हो जाए।*

〰✧ सेवा का सोची, सेवा में लग जाए। परमधाम में चलो, तो परमधाम में चला जाये। सूक्ष्मवतन में चलो, सेकण्ड में चला जाए। जो सोचो वह ऑर्डर में हो। अभी इस शक्ति को बढाओ। *छोटे-छोटे संस्कारों में, युद्ध में समय नहीं गंवाओ,* आज इस संस्कार को भगाया, कल उसको भगाया।

〰✧ *कन्ट्रोलिंग पॉवर धारण करो तो अलग-अलग संस्कार पर टाइम नहीं लगाना पडेगा।* नहीं सोचना है, नहीं करना है, नहीं बोलना है। स्टॉप। तो स्टॉप हो जाए। यह है कर्मातीत अवस्था तक पहुँचने की विधि।

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

∬ 4 ∬ रूहानी ड्रिल (Marks:- 10)

➢➢ *इन महावाक्यों को आधार बनाकर रूहानी ड्रिल का अभ्यास किया ?*

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

———————————————————

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

❂ *अशरीरी स्थिति प्रति* ❂

☆ *अव्यक्त बापदादा के इशारे* ☆

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

〰✧ अभी यह धूम मचाओ। *अन्त:वाहक शरीर से चक्र लगाने का अभ्यास करो।* ऐसा समय आयेगा जो प्लेन भी नहीं मिल सकेगा। ऐसा समय नाजुक होगा तो आप लोग पहले पहुँच जायेंगे। अन्त:वाहक शरीर से चक्र लगाने का अभ्यास ज़रूरी है। *ऐसा अभ्यास करो जैसे प्रैक्टिकल में सब देख कर मिलकर आये हैं।* दूसरे भी अनुभव करें - हाँ, यह हमारे पास वही फ़रिश्ता आया था। फिर ढूँढने निकलेंगे फ़रिश्तों को। अगर इतने सब फ़रिश्ते चक्र लगायें तो क्या हो जाये ? अॉटोमेटिकली सबका अटेन्शन जायेगा। *तो अभी साकारी के साथसाथ आकारी सेवा भी ज़रूर चाहिए।* अच्छा - अभी अमृतवेले शरीर से डिटैच हो कर चक्र लगाओ।

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

∬ 5 ∬ अशरीरी स्थिति (Marks:- 10)

➢➢ *इन महावाक्यों को आधार बनाकर अशरीरी अवस्था का अनुभव किया ?*

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

∬ 6 ∬ बाबा से रूहरिहान (Marks:-10)
(आज की मुरली के सार पर आधारित...)

✺ *"ड्रिल :- सदा सर्विस के खयालातों में रहना"*

➳ _ ➳ *मैं आत्मा बादलों के विमान में बैठ बापदादा के साथ पूरे ब्रह्मांड का चक्कर लगा रही हूँ... बाबा के साथ सूरज, चाँद, सितारों, आसमान की सैर करते हुए आनंद की लहरों में डोल रही हूँ...* परमधाम, सूक्ष्मवतन से होते हुए हम विश्व के गोले के ऊपर बैठ जाते हैं... बापदादा सारे विश्व की प्यासी, दुखी आत्माओं, तमोप्रधान प्रकृति को दिखाकर मुझे विश्व सेवा करने की शिक्षाएं देते हैं...

❊ *प्यारे बाबा सबका कल्याण कर अन्धो की लाठी बनने के लिए प्रेरित करते हुए कहते है:-* "मेरे मीठे फूल बच्चे... ईश्वर पिता की तरहा विश्व कल्याण की भावना से भर जाओ... जो मीठे सुख जो खुशियां आपके जीवन में महकी है उन्हें सबके दिल आँगन में खिला आओ... *सारा विश्व सच्ची खुशियो में खिलखिलाये और हर मन मीठा मुस्कराये ऐसी रूहानी सेवा करते रहो..."*

➳ _ ➳ *ज्ञान के प्रकाश को स्वयं में भरकर चारों ओर ज्ञान की रोशनी फैलाते हुए मैं आत्मा कहती हूँ:-* "हाँ मेरे मीठे प्यारे बाबा... *मै आत्मा आप समान सबको सुखी और ईश्वरीय वर्से का अधिकारी बना रही हूँ...* सबको सच्चे सुख का रास्ता दिखाने वाली मा सुखदाता हो गई हूँ... ज्ञान के प्रकाश से हर दिल की राहे रौशन कर रही हूँ..."

❊ *पतित पावन मीठे बाबा पवित्रता की किरणों से मुझे चमकाते हुए कहते हैं:-* "मीठे प्यारे लाडले बच्चे... *दिन रात सदा सबके कल्याण के ख्यालातों में मगन रहो... स्वयं भी व्यर्थ से मुक्त रहेंगे और सबके जीवन को सुनहरे सुखो से सजाने वाले...* विश्व कल्याणकारी बन मीठे बापदादा के दिल तख्त पर डठलायेंगे... और खबसरत भाग्य के धनी बन जायेंगे..."

➳ _ ➳ *दिन रात अपनी बुद्धि में सर्विस के खयालातों को भरकर मैं आत्मा कहती हूँ:-* "मेरे प्राणप्रिय बाबा... मै आत्मा आपसे पायी खुशियो की दौलत को हर दिल पर लुटा रही हूँ... सच्चे ज्ञान की झनकार से हर दिल में सुख की बहार सजा रही हूँ... *सबका जीवन खुशियो से खिल रहा है और पूरा विश्व मीठा मुस्करा रहा है..."*

❉ *विश्व कल्याण का झंडा मेरे हाथों में सौंपते हुए मेरे बाबा कहते हैं:-* "प्यारे सिकीलधे मीठे बच्चे... ईश्वर पिता के सहयोगी बनने वाले और सबके जीवन को नूरानी बनाने वाले महा भाग्यशाली हो... सच्चे सहारे होकर, सबको इन मीठी खुशियो का पैगाम देते जाओ... *ज्ञान के तीसरे नेत्र से सबकी जिंदगी में उजाला कर सुखो का पता दे आओ..."*

➳ _ ➳ *मैं विश्व कल्याणी फरिश्ता पूरे विश्व और प्रकृति को सर्व गुणों और शक्तियों की साकाश देते हुए कहती हूँ:-* "हाँ मेरे मीठे बाबा... *मैं आत्मा ईश्वरीय सेवा धारी बनकर अपने महान भाग्य पर मुस्करा उठी हूँ...* कभी अपने ही गमो में रोने वाली, आज धरा से दुःख के आँसू का सफाया कर रही हूँ... चारो ओर खुशहाली और आनन्द के फूल खिलाने वाली खुबसूरत माली हो गई हूँ..."

———————————————————

∬ 7 ∬ योग अभ्यास (Marks:-10)
(आज की मुरली की मुख्य धारणा पर आधारित...)

✺ *"ड्रिल :- सदा हर्षितमुख रहना है*"

➳ _ ➳ अपने शिव परम पिता परमात्मा से होने वाली प्राप्तियों को स्मृति में लाते ही चेहरे पर एक दिव्य अलौकिक मुस्कराहट स्वत: ही आ जाती है और *मन बुद्धि से मैं आत्मा उन सुंदर अनुभवों की मधुर स्मृतियों में खो जाती हूँ जो मेरे शिव पिता मुझे अक्सर करवाते रहते हैं, वो अनुभव जो मुझे अनुभवीमूर्त बना कर हर परिस्थिति में अचल और स्थिर रखते हैं*।

➳ _ ➳ ज्ञान की मस्ती में डूबी मैं आत्मा उन सुंदर सलौने अनुभवों को स्मृति में लाकर अपने दिलाराम बाबा की अति मीठी याद में खो जाती हूँ और *देह से न्यारी होकर, अपना दिव्य सतोगुणी, ज्योतिर्मय स्वरूप को धारण कर भृकुटि की कुटिया से बाहर निकल कर, ऊपर आकाश की ओर चल पड़ती हूँ*। अपने अति सुंदर, उज्ज्वल स्वरूप में, दिव्य गुणों की महक चारों और फैलाते हुए, अपने दिलाराम बाबा से मिलने की लगन में मगन मैं आत्मा ज्ञान और योग के सुंदर पंख लगा कर, निरन्तर ऊपर की ओर उड़ती जा रही हूँ।

➳ _ ➳ आनन्द से भरपूर, रूहानी अलौकिक मस्ती में डूबी मैं आत्मा हर गम से अनजान, इस देह की दुनिया के हर बन्धन से मुक्त, आजाद पँछी की भांति उन्मुक्त हो कर पूरे भू लोक का भ्रमण करते हुए, नीले गगन को पार कर, फ़रिशतो की दुनिया से भी परें, अपने घर निर्वाण धाम, में प्रवेश करती हूँ। *गहन शांति की यह दुनिया जहां किसी भी प्रकार का कोई शोर नही, ऐसे अपने शांतिधाम घर मे पहुंच कर, गहन शांति की अनुभूति में मैं खो जाती हूँ*। गहन शांति की स्थिति का यह अनुभव एक दम निराला और अनोखा है।

➳ _ ➳ गहन शांन्त चित स्थिति में स्थित मैं आत्मा अब शांति के सागर अपने शिव पिता की ओर चल पड़ती हूँ। *एक अखंड महाज्योति के रूप में मेरे शिव पिता परमात्मा अपनी सर्वशक्तियों की अनन्त किरणे फैलाते हुए मेरे सामने सुशोभित हो रहें हैं*। उनके बिल्कुलसमीप पहुँच कर मैं आत्मा उनके पास जा कर उनके साथ अटैच हो जाती हूँ। उनकी सर्वशक्तियाँ फुल फोर्स के साथ मेरे ऊपर बरसने लगती है और मैं आत्मा अपने शिव पिता से आ रही समस्त शक्तियों को स्वयं में गहराई तक समाने लगती हूँ।

➳ _ ➳ ऐसा अनुभव हो रहा है जैसे शक्ति का एक तेज करेन्ट मेरे शिव पिता से आ रहा है और मुझ आत्मा में प्रवेश कर अपनी सारी ऊर्जा मेरे अन्दर प्रवाहित कर, मुझ असीम शक्तिवान बना रहा है। *मेरी खोई हुई एनर्जी वापिस लौट रही है और मैं स्वयं को बहुत ही शक्तिशाली अनुभव कर रही हूँ*। सर्वशक्ति सम्पन्न स्वरूप बन कर अब मैं अपने परमधाम घर से वापिस नीचे की ओर लौटती हूँ और सक्ष्म लोक में प्रवेश करती हूँ। अपनी चमकीली

फ़रिशता ड्रेस को धारण कर, अब मैं बापदादा के पास पहुँचती हूँ।

➳ _ ➳ अपना वरदानी हाथ मेरे मस्तक पर रख कर, मुझे सदा अचल और स्थिर रहने का वरदान देते हुए, अपनी लाइट माइट से बाबा मुझे भरपूर कर देते हैं। *ज्ञान के अथाह खजाने मुझ पर लुटा कर सर्व खजानों से बाबा मुझे सम्पन्न बना देते हैं*। भरपूर हो कर, अपनी फ़रिशता ड्रेस को वहीं उतार कर अपने असीम ऊर्जावान, अचल, स्थिर और ज्ञानवान निराकार ज्योति बिंदु स्वरूप को धारण कर, अब मैं आत्मा सूक्ष्म वतन से नीचे साकारी दुनिया की ओर प्रस्थान करती हूँ और पाँच तत्वों के बने अपने साकारी तन में प्रवेश कर जाती हूँ।

➳ _ ➳ बाबा की लाइट माइट और सर्वशक्तियों से स्वयं को सदा भरपूर अनुभव करते हुए अब मैं हर परिस्थिति में सदा अचल और स्थिर रहती हूँ। *सम्पूर्ण ज्ञानवान बन, ज्ञान की मस्ती में रहते हुए, सबको इस ज्ञान से परिचित करवाकर, यह अद्भुत ज्ञान देने वाले अपने ज्ञान सागर बाप का शो करते हुए, अब मैं सबको बाप से मिलाने का रूहानी धन्धा हर समय करते हुए सदा हर्षितमुख रह, सबके जीवन में खुशियां बिखेरती रहती हूँ*।

∬ 8 ∬ श्रेष्ठ संकल्पों का अभ्यास (Marks:- 5)
(आज की मुरली के वरदान पर आधारित...)

✺ *मैं एक बाप में सारे संसार की अनुभूति करते हुए निरन्तर एक कि याद में रहने वाली आत्मा हूँ।*
✺ *मैं सहज योगी आत्मा हूँ।*

➢➢ इस संकल्प को आधार बनाकर स्वयं को श्रेष्ठ संकल्पों में स्थित करने का अभ्यास किया ?

∬ 9 ∬ श्रेष्ठ संकल्पों का अभ्यास (Marks:- 5)
(आज की मुरली के स्लोगन पर आधारित...)

✺ *मैं आत्मा पवित्रता रूपी धर्म को सदा जीवन में धारण करती हूँ ।*
✺ *मैं महान आत्मा हूँ ।*
✺ *मैं परम पवित्र आत्मा हूँ ।*

➢➢ इस संकल्प को आधार बनाकर स्वयं को श्रेष्ठ संकल्पों में स्थित करने का अभ्यास किया ?

———————————————

∬ 10 ∬ अव्यक्त मिलन (Marks:-10)
(अव्यक्त मुरलियों पर आधारित...)

✺ अव्यक्त बापदादा :-

➳ _ ➳ 1. दादियों का एक संकल्प बापदादा के पास पहुँचा है। *दादियाँ चाहती हैं कि अभी बापदादा साक्षात्कार की चाबी खोले, यह इन्हों का संकल्प हैं।* आप सब भी चाहते हो? बापदादा चाबी खोलेंगे या आप निमित्त बनेंगे? अच्छा, बापदादा चाबी खोले, ठीक है। बापदादा हाँ जी करते हैं, (ताली बजा दी) पहले पूरा सुनो। बापदादा को चाबी खोलने में क्या देरी है, लेकिन करायेगा किस द्वारा? प्रत्यक्ष किसको करना है? बच्चों को या बाप को? बाप को भी बच्चों द्वारा करना है क्योंकि *अगर ज्योतिबिन्दु का साक्षात्कार भी हो जाए तो कई तो बिचारे..., बिचारे हैं ना! तो समझेंगे ही नहीं कि यह क्या है।* अन्त में शक्तियाँ और पाण्डव बच्चों द्वारा बाप प्रत्यक्ष होना है।

➳ _ ➳ 2. तो *ब्रह्मा बाप को फालो करो।* अशरीरी, बिन्दी आटोमेटिकली हो जायेंगे।

➳ _ ➳ 3. आप भी *एक रूहानी रोबट की स्थिति तैयार करो।* जिसको कहेंगे रूहानी कर्मयोगी. फरिश्ता कर्मयोगी। पहले आप तैयार हो जाना।

➳ _ ➳ 4. बापदादा ऐसे रूहानी चलते-फिरते कर्मयोगी फरिश्ते देखने चाहते हैं। *अमृतवेले उठो, बापदादा से मिलन मनाओ, रूह-रूहान करो, वरदान लो।* जो करना है वह करो। लेकिन बापदादा से रोज अमृतवेले 'कर्मयोगी फरिश्ता भव' का वरदान लेके फिर कामकाज में जाओ।

➳ _ ➳ 5. इस स्थिति की धरनी तैयार करो तो बापदादा साक्षात बाप बच्चों द्वारा साक्षात्कार अवश्य करायेगा। *'साक्षात् बाप और साक्षात्कार' - यह दो शब्द याद रखना।* बस हैं ही फरिश्ते। सेवा भी करते हैं, ऊपर की स्टेज से फरिश्ते आये, सन्देश दिया फिर ऊपर चले गये अर्थात् ऊँची स्मृति में चले गये।

✺ *ड्रिल :- "बापदादा से रोज अमृतवेले 'कर्मयोगी फरिश्ता भव' का वरदान लेने का अनुभव"*

➳ _ ➳ हमारी मीठी मीठी दादियों के मन में विश्व कल्याण के कितने श्रेष्ठ संकल्प है... दादियों ने बापदादा को प्रत्यक्ष करने के लिए अपना सब कुछ समर्पित किया है... विश्व की सर्व आत्माओ के लिए दादियों का संकल्प है की *बापदादा साक्षात्कार की चाबी खोले...* बापदादा को तो साक्षात्कार की चाबी खोलने में कोई देरी नहीं लगती... लेकिन *वो साक्षात्कार भी हम बच्चों के द्वारा ही करायेंगे... बाप को बच्चों के द्वारा ही प्रत्यक्ष होना है...* क्योंकि बाप तो निराकार ज्योतिबिन्दु है... अगर ज्योतिबिन्दु का साक्षात्कार भी हो जाए तो कई तो बिचारे समझेंगे ही नहीं कि यह क्या है... तो अंत में शक्तियाँ और पाण्डव बच्चों द्वारा बाप प्रत्यक्ष होना है...

➳ _ ➳ अमृतवेला में मैं सदा रूहानी खुश्बु से महकती हुई बापदादा की दिलतख्तनशीन ब्राह्मण आत्मा.. *अपने फरिश्ताई ड्रेस में...* अपने सेवा स्थान से उड चलती हू अपने प्यारे मधुबन *पांडव भवन की ओर...* रास्ते में पेड़ पहाडियों को निहारते हुए... जो भी आत्मा सामने दिखे... उन्हे शांति की शक्ति से भरपूर करते हुए *पहुंची बापदादा के कमरे में...* वहाँ मुझे आते देख बापदादा मस्कराए और *मझे अपनी मीठी दृष्टि से निहाल करने लगे...*

बापदादा के नयनो से प्रेम की किरणें मुझ पर बरस रही है... मैं परमात्म प्रेम से तृप्त अनुभव कर रही हूँ... *बापदादा के इस रूहानी मिलन में वो परमानंद का अनुभव* हो रहा है जो आजतक कभी नहीं हुआ...

➳ _ ➳ उनसे रूह-रूहान करते हुए मैं स्वयं को पद्मापद्म भाग्यशाली महसूस कर रही हूँ... बापदादा अपना प्रेम से भरपूर हाथ मेरे मस्तक पर रखते हुए मुझे *कर्मयोगी फरिश्ता भव का वरदान दे रहे* है... बापदादा का यह वरदान पाकर मैं आत्मा धन्य हो गई... बापदादा से विदाई लेकर वापस लौटती हूँ... लेकिन अब मेरी स्थिति पहले से अधिक श्रेष्ठ है... *मेरा हर कर्म ब्रह्मा बाप समान है...* चलना-फिरना, बोलना, हंसना, उठना-बैठना... हर कर्म में मैं आत्मा ब्रह्माबाप को फाॅलो कर रही हूँ... मैं *अशरीरी स्थिति की अनुभूति में मग्न* हूँ... इस श्रेष्ठ स्मृति में ही हर कर्म हो रहा है... *आटोमेटिकली बिन्दी अवस्था...*

➳ _ ➳ कर्म करते हुए भी कर्मो से एकदम न्यारी प्यारी अवस्था... एक ऐसी स्थिति है जो मैं स्वयं को *रूहानी रोबट अनुभव* कर रही हूँ... मैं रूहानी *कर्मयोगी फरिश्ता उडता जा रहा हूँ... मैं इस ही स्मृति में उडता जा रहा हू* कि मैं बाबा का रूहानी रोबट हूँ... सूक्ष्मवतन से नीचे उतर कर... सेवा करते हुए सबको बापदादा का परिचय बोल से और चाल चलन से देते हुए... फिर से ऊपर चलते हुए मुझे निकलती हुई लाइट माइट की किरणें पूरे ग्लोब पर पड रही हैं... आत्माएं मुझे देखकर धन्य-धन्य अनुभव कर रही है... सारी आत्माएं मुझसे निकलती लाइट माइट अनुभव कर रही हैं... उन लाइट और माइट से *सारी ब्राह्मण आत्माएं भी कर्मयोगी फरिश्ता बन गई है...*

➳ _ ➳ विश्व की सारी ब्राह्मण आत्मायें ग्लोब के आसपास चक्र लगा रही है... सबसे निकलती लाइट माइट अंधो की लाठी बन चुकी है... हर *एक ब्राह्मण आत्मा ब्रह्मा बाप समान संपूर्ण सम्पन्न और कर्मातीत स्थिति के लिए पुरूषार्थ कर रहा है...* हर एक ब्राह्मण में बापदादा का साक्षात्कार सारी धरती की आत्माओ को हो रहा है... *चारों ओर साक्षात्कार की धूम मची है...* सबको अनुभव हो रहा है कि कोई फरिश्ते आए... और साक्षात्कार करा कर भगवान का सन्देश दिया और चले गए... अन्त में शक्तियाँ और पाण्डव बच्चों दवारा बाप

प्रत्यक्ष हुए... दादियों का संकल्प भी पूरा हुआ... सभी के मन से यही आवाज निकल रहा है वाह बाबा वाह... और बाप भी कह रहे है वाह बच्चें वाह...

⊙_⊙ आप सभी बाबा के प्यारे प्यारे बच्चों से अनुरोध है की रात्रि में सोने से पहले बाबा को आज की मुरली से मिले चार्ट के हर पॉइंट के मार्क्स ज़रूर दें ।

♔ ॐ शांति ♔